रजनीकांत की नई फिल्म धर्मन का फर्स्ट लुक आउट

भारतीय सिनेमा के दो सबसे बड़े दिग्गज कलाकारों रजनीकांत और कमल हासन का नाम जब किसी प्रोजेक्ट से जुड़ता है, तो दर्शकों की उम्मीदें अपने आप बढ़ जाती हैं. अब रजनीकांत की बहुप्रतीक्षित फिल्म थलाइवर 173 का आधिकारिक टाइटल 'धर्मन' घोषित कर दिया गया है, जिसने फैंस के बीच नई चर्चा छेड़ दी है. काफी समय से इस फिल्म को लेकर अलग-अलग तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं. फैंस जानना चाहते थे कि आखिर फिल्म का नाम क्या होगा और रजनीकांत किस किरदार में नजर आएंगे.

अब टाइटल रिवील के साथ इन सवालों के जवाब भी मिलने लगे हैं. फिल्म के फर्स्ट लुक पोस्टर में रजनीकांत का अंदाज बेहद प्रभावशाली दिखाई दे रहा है. उनका लुक गंभीर, रहस्यमयी और ताकतवर नजर आ रहा है. रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म में वह एक डॉक्टर की भूमिका निभाएंगे, लेकिन उनका किरदार पारंपरिक डॉक्टर से काफी अलग होगा. यही वजह है कि उन्हें 'डेडली डॉक्टर' कहा जा रहा है. फर्स्ट लुक रिलीज होने के कुछ ही घंटों में सोशल मीडिया पर इसकी तस्वीरें वायरल हो गईं.

फैंस ने पोस्टर की जमकर तारीफ की और रजनीकांत के नए अवतार को बेहद दमदार बताया. कई यूजर्स का मानना है कि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बड़ा रिकॉर्ड बना सकती है. रजनीकांत की पिछली फिल्मों की तरह 'धर्मन' से भी दर्शकों को जबरदस्त एक्शन, दमदार कहानी और मनोरंजन की उम्मीद है. फिल्म की स्टारकास्ट और कहानी को लेकर अभी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन टाइटल और फर्स्ट लुक ने यह साफ कर दिया है कि मेकर्स इसे बड़े स्तर पर तैयार कर रहे हैं.

दांव पर लगा भरोसा और टूटते एलायंस

प्राइम वीडियो ने अपने नए अनस्क्रिप्टेड रियलिटी शो एलायंस का ट्रेलर रिलीज कर दिया है, जो भरोसे, रणनीति और सर्वाइवल पर आधारित एक हाई-स्टेक्स गेम दिखाता है. यह शो मीडिया और एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री की कई चर्चित हस्तियों को जोड़ियों में एक साथ लाता है, जहां हर कदम पर रिश्तों की परीक्षा होगी. शो को कुणाल खेमू होस्ट कर रहे हैं और इसका निर्माण बणिजय एशिया ने किया है.

एलायंस एक बड़े पैमाने पर तैयार किया गया अनस्क्रिप्टेड शो है, जो 6 हफ्तों में कुल 42 एपिसोड के साथ दर्शकों के सामने आएगा. नए एपिसोड रोजाना दोपहर 12 बजे स्ट्रीम होंगे. शो का प्रीमियर 26 जून को भारत समेत 240 से ज्यादा देशों में प्राइम वीडियो पर होगा. यह शो एक हाई-टेक अंडरग्राउंड फैसिलिटी में सेट है, जहां लग्जरी और कंपटीशन दोनों एक साथ चलते हैं.

टीम इंडिया का स्टार बनना चाहते थे शाहरुख खान

शाहरुख खान की गिनती आज दुनिया के सबसे लोकप्रिय और सफल अभिनेताओं में होती है. उनकी फिल्मों का इंतजार फैंस बेसब्री से करते हैं और उनकी हर उपलब्धि सुर्खियां बन जाती है. लेकिन हाल ही में उन्होंने अपने बचपन के उस सपने का जिक्र किया, जिसके बारे में जानकर उनके प्रशंसक भी हैरान रह गए. एक बातचीत के दौरान शाहरुख खान ने बताया कि बचपन में उनका झुकाव फिल्मों की बजाय खेलों की तरफ ज्यादा था. उन्हें क्रिकेट और फुटबॉल खेलना बेहद पसंद था और वह घंटों मैदान में समय बिताया करते थे. उनका सपना था कि एक दिन वह पेशेवर खिलाड़ी बनें और भारत का प्रतिनिधित्व करें.

शाहरुख ने कहा कि उन्हें लगता था कि उनका भविष्य खेलों में ही बनेगा. वह क्रिकेट में खास दिलचस्पी रखते थे और टीम इंडिया की जर्सी पहनकर देश के लिए खेलने की कल्पना किया करते थे. लेकिन जीवन ने उनके लिए कुछ और ही तय कर रखा था. युवावस्था के दौरान खेलते समय लगी एक गंभीर चोट के कारण उनका खेल करियर आगे नहीं बढ़ सका. इसके बाद उनका रुझान धीरे-धीरे थिएटर और अभिनय की ओर बढ़ने लगा. कॉलेज के दिनों में उन्होंने नाटकों में हिस्सा लेना शुरू किया और यहीं से उनके अभिनय सफर की नींव पड़ी.

इसके बाद शाहरुख खान ने टेलीविजन से अपने करियर की शुरुआत की और फिर बॉलीवुड में कदम रखा. अपनी मेहनत, लगन और प्रतिभा के दम पर उन्होंने वह मुकाम हासिल किया, जिसका सपना हर कलाकार देखता है. आज उन्हें 'किंग खान', 'बॉलीवुड के बादशाह' और 'रोमांस के किंग' जैसे नामों से जाना जाता है. हालांकि शाहरुख खान का खिलाड़ी बनने का सपना पूरा नहीं हो सका, लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत और जुनून से अभिनय की दुनिया में इतिहास रच दिया.

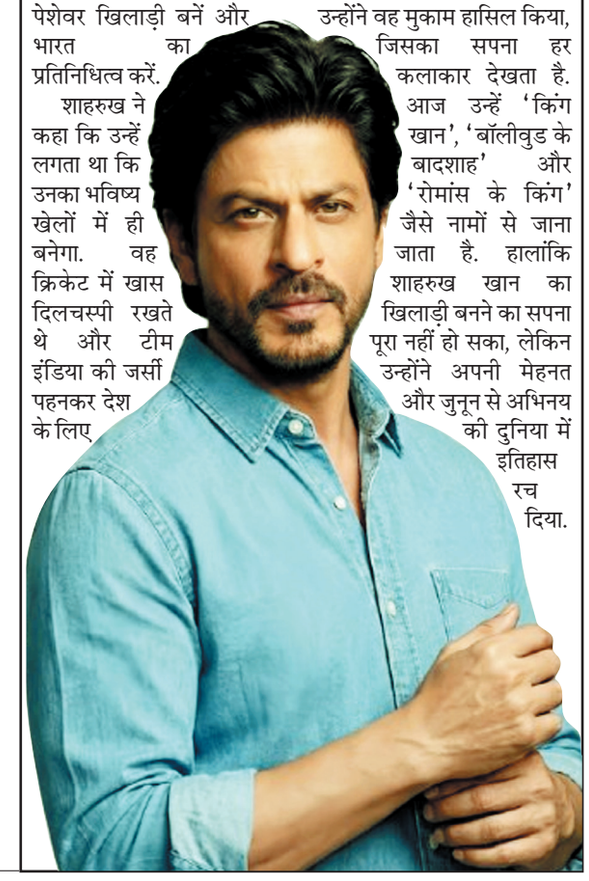

टेलीविजन हलचल

क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2 में भविष्य को लेकर बढ़ी चर्चा

लोकप्रिय पारिवारिक धारावाहिक क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2 के भविष्य को लेकर दर्शकों के बीच चर्चाएं तेज हो गई हैं। हाल के घटनाक्रमों और कहानी में आए बदलावों के बाद यह अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या शो अपने समापन की ओर बढ़ रहा है. शो की वापसी ने जहां पुराने दर्शकों की यादों को ताजा किया, वहीं नई पीढ़ी को भी विरानी परिवार की कहानी से जोड़ने में सफलता हासिल की है. हालांकि, शो के ऑफ-एयर होने या समाप्त होने को लेकर निर्माताओं की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है. मौजूदा कहानी कई भावनात्मक मोड़ों और पारिवारिक संघर्षों के बीच आगे बढ़ रही है, जिससे दर्शकों के बीच इसके संभावित निष्कर्ष को लेकर चर्चाएं शुरू हो गई हैं. यदि वर्तमान ट्रैक किसी बड़े मोड़ की ओर संकेत करता है, तो आने वाले एपिसोड में रिश्तों की गहराई और पारिवारिक मूल्यों को प्रमुखता से दिखाया जा सकता है. कहानी के केंद्र में एक बार फिर तुलसी विरानी का किरदार है, जिसने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है. माना जा रहा है कि यदि शो अपने अंतिम चरण में पहुंच रहा है तो निर्माताओं द्वारा तुलसी के संघर्ष, मूल्यों और विरासत को विशेष रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है. .

गंगा माई की बेटियां में आएंगे बड़े ट्विस्ट

गंगा माई की बेटियां' की कहानी अब एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है, जहां हर किरदार की जिंदगी में बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं. आगामी एपिसोड में रिश्तों के समीकरण बदलते नजर आएंगे और कई नए रहस्य सामने आएंगे. सबसे पहले बात करें स्नेहा और सिद्धू की, तो दोनों के बीच लंबे समय से चली आ रही दूरियां अब खत्म होती दिखाई देंगी. स्नेहा को अपनी गलतफहमियों का एहसास होगा और वह सिद्धू से माफी मांगकर रिश्ते को एक नया मौका देने का फैसला करेगी. इस भावुक पल के बाद दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ेंगी, जिसे देखकर उनके चाहने वाले काफी खुश होंगे. लेकिन कहानी में असली ट्विस्ट तब आएगा जब दुर्गावती को इन दोनों की बढ़ती नजदीकियां पता चलेंगी. वह पहले से ही स्नेहा को पसंद नहीं करती और अब उसके खिलाफ एक नई साजिश रचने की तैयारी में जुट जाएगी. दुर्गावती की यह चाल आने वाले एपिसोड में कई नई परेशानियां खड़ी कर सकती है. उधर पूर्वी भी अपने असली इरादे जाहिर करने वाली है. अब तक पर्दे के पीछे रहकर खेल खेलने वाली पूर्वी खुलकर स्नेहा को चुनौती देगी.

साड़ी में जाह्नवी कपूर ने लूटी महफिल

कपूर परिवार में एक बार फिर खुशियों का माहौल है. लंबे समय से लाइमलाइट से दूर रहने वाली अंशुला कपूर अब अपनी जिंदगी के नए सफर की शुरुआत करने जा रही हैं. उनकी शादी की रस्में शुरू हो चुकी हैं और पहला कार्यक्रम माता की चौकी के रूप में आयोजित किया गया. इस धार्मिक आयोजन में परिवार के सभी करीबी सदस्य मौजूद रहे और माहौल पूरी तरह भक्ति और उत्साह से भरा नजर आया. इस खास अवसर पर जहां अंशुला कपूर ने अपने सादगी भरे अंदाज से लोगों का दिल जीता, वहीं जाह्नवी कपूर ने अपने शानदार ट्रेडिशनल लुक से महफिल लूट ली. जाह्नवी ने बेहद खूबसूरत साड़ी को चुना, जिसके साथ उन्होंने क्लासिक ज्वेलरी और सॉफ्ट मेकअप कैरी किया. उनका यह लुक सोशल मीडिया यूजर्स को काफी पसंद आ रहा है.

जाह्नवी कपूर की तस्वीरें सामने आते ही फैंस ने उन्हें रॉयल क्वीन, महारानी और एथनिक ब्यूटी जैसे नामों से नवाजना शुरू कर दिया. उनकी सादगी और शाही अंदाज का यह अनोखा मेल लोगों को खूब आकर्षित कर रहा है.

नवाज ने जिया था रमन राघव का किरदार

हिंदी सिनेमा की चर्चित साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म 'रमन राघव 2.0' की रिलीज के 10 वर्ष पूरे हो गए हैं. अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनी इस फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने सीरियल किलर रमन का ऐसा किरदार निभाया था, जिसे आज भी भारतीय सिनेमा के सबसे खौफनाक और यादगार चरित्रों में गिना जाता है.

24 जून 2016 को रिलीज हुई इस फिल्म को इसकी डार्क स्टोरी, बेहतरीन निर्देशन और दमदार अभिनय के लिए दर्शकों तथा समीक्षकों की खूब सराहना मिली थी. हालांकि फिल्म की सबसे बड़ी ताकत नवाजुद्दीन सिद्दीकी का अभिनय माना गया, जिन्होंने एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई थी जो बिना किसी पछतावे या स्पष्ट कारण के हत्या करता है. नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने इस किरदार की तैयारी के लिए बेहद अलग तरीका अपनाया था. उन्होंने बताया कि शूटिंग शुरू होने से तीन दिन पहले वह फिल्म की स्क्रिप्ट लेकर लोनावला चले गए थे और एक सुनसान इलाके के साधारण होटल में ठहरे थे. वहां उन्होंने खुद को पूरी तरह बाहरी दुनिया से अलग कर लिया था ताकि किरदार की मानसिकता को गहराई से समझ सकें.

असली मानसून में शूट हो रही है तुम्बाड 2

वर्ष 2018 की चर्चित हॉरर फिल्म 'तुम्बाड' की तरह उसके सीक्वल 'तुम्बाड 2' में भी बारिश और प्रकृति कहानी का अहम हिस्सा बनने जा रही है.

सूत्रों के अनुसार, फिल्म की टीम कृत्रिम बारिश के बजाय वास्तविक मानसून में शूटिंग के लिए महाराष्ट्र के विभिन्न इलाकों में भारी वर्षा वाले स्थानों की तलाश कर रही है, जिससे पहली फिल्म जैसी प्रामाणिकता और रहस्यमयी वातावरण को दोबारा रचा जा सके.

तुम्बाड की पहचान उसकी रहस्यमयी दुनिया, लगातार बारिश और भयावह वातावरण से बनी थी. इस माहौल को साकार करने के लिए पहली फिल्म की शूटिंग चार अलग-अलग मानसून सीजन में की गई थी. अब 'तुम्बाड 2' के निर्माता भी उसी प्रामाणिकता को बनाए रखने के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं. बताया जा रहा है कि अनियमित मानसून के चलते प्रोडक्शन टीम लगातार मौसम की निगरानी कर रही है और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के अनुसार अपने शूटिंग कार्यक्रम में बदलाव कर रही है.

साइंस एंड टेक्नोलॉजी

जुलाई में लॉन्च होगा रेडमी का नया मिड-रेंज

रेडमी एक बार फिर मिड-रेंज स्मार्टफोन बाजार में बड़ा दांव खेलने की तैयारी कर रहा है. हालिया लीक रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी रेडमी नोट 17 सीरीज के तहत एक ऐसे स्मार्टफोन पर काम कर रही है, जो बैटरी क्षमता के मामले में नए मानक स्थापित कर सकता है. रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इस आगामी डिवाइस में लगभग 9000 की बड़ी बैटरी दी जा सकती है, जो सामान्य स्मार्टफोन्स की तुलना में काफी अधिक होगी.

बड़ी बैटरी का सबसे बड़ा फायदा लंबे बैकअप के रूप में देखने को मिलेगा. ऐसे यूजर्स जो दिनभर वीडियो स्ट्रीमिंग, गेमिंग, सोशल मीडिया और मल्टीटास्किंग करते हैं, उन्हें बार-बार फोन चार्ज करने की जरूरत नहीं पड़ेगी. यही कारण है कि यह डिवाइस लॉन्च से पहले ही चर्चा का विषय बन गया है.बैटरी के अलावा डिस्प्ले पर भी कंपनी खास ध्यान देती दिखाई दे रही है. लीक के अनुसार फोन में 1.5 फ्लैट डिस्प्ले मिल सकता है, जो बेहतर विजुअल क्वालिटी और शार्पनेस प्रदान करेगा. इसके साथ हाई-वॉल्यूम डुअल स्पीकर्स भी दिए जाने की संभावना है, जिससे मनोरंजन का अनुभव और बेहतर हो सकता है.

रेडमी इस फोन को सिर्फ बैटरी-केंद्रित डिवाइस नहीं बनाना चाहती, बल्कि इसे मजबूती के मामले में भी प्रीमियम स्तर तक ले जाने की योजना है. इसलिए इसमें फ्लैगशिप-ग्रेड वॉटर रेजिस्टेंस और ड्रॉप रेजिस्टेंस फीचर्स दिए जा सकते हैं. यह उन यूजर्स के लिए अच्छी खबर होगी जो टिकाऊ और लंबे समय तक चलने वाले स्मार्टफोन की तलाश में रहते हैं.

फिलहाल डिवाइस के प्रोसेसर, कैमरा सेटअप, चार्जिंग स्पीड और कीमत जैसी जानकारियां सामने नहीं आई हैं. वहीं कंपनी ने भी अभी तक किसी प्रकार की आधिकारिक घोषणा नहीं की है. इसके बावजूद लीक रिपोर्ट्स ने यह संकेत जरूर दे दिया है कि रेडमी नोट17 सीरीज में इस बार बैटरी और ड्यूरेबिलिटी को सबसे बड़ी प्राथमिकता दी जा सकती है.

सुपर न्यू मून से होगा सूर्य ग्रहण

वैज्ञानिकों ने बताया सच

सूर्य ग्रहण और चंद्रमा की विभिन्न अवस्थाएं हमेशा से खगोल विज्ञान में चर्चा का विषय रही हैं. खासकर जब सुपर न्यू मून जैसी विशेष स्थिति सामने आती है, तो लोगों के बीच इसे लेकर कई तरह की अटकलें लगने लगती हैं. इसी संदर्भ में यह सवाल तेजी से चर्चा में है कि क्या सुपर न्यू मून वास्तव में सूर्य ग्रहण का कारण बन सकता है या यह केवल एक खगोलीय संयोग है.

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा, पृथ्वी और सूर्य एक सीधी रेखा में आ जाते हैं और चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को आंशिक या पूर्ण रूप से ढक देता है. यह स्थिति हमेशा न्यू मून के दौरान ही संभव होती है. लेकिन हर न्यू मून पर सूर्य ग्रहण नहीं होता, क्योंकि चंद्रमा की कक्षा पृथ्वी की कक्षा के सापेक्ष थोड़ा झुकी हुई होती है.

इसी कारण अधिकतर समय चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच से गुजरता तो है, लेकिन उसकी छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ती. सुपर न्यू मून एक ऐसी स्थिति होती है जब चंद्रमा पृथ्वी के सबसे करीब होता है और न्यू मून की अवस्था में होता है.

इसका प्रभाव मुख्य रूप से ज्वार-भाटा और चंद्रमा के आकार की दृश्यता पर पड़ता है, लेकिन इसका सूर्य ग्रहण बनने से कोई सीधा संबंध नहीं होता. साल 2026 का दूसरा और अंतिम सूर्य ग्रहण 12 अगस्त को होने वाला है, जिसे एक दुर्लभ पूर्ण सूर्य ग्रहण माना जा रहा है. इस घटना को लेकर वैज्ञानिक समुदाय में काफी उत्साह है क्योंकि यह कई क्षेत्रों में दिखाई देने की संभावना रखता है.

हालांकि, इसे सुपर न्यू मून के कारण होने वाली घटना मानना गलत होगा. सूर्य ग्रहण और सुपर न्यू मून दोनों ही स्वतंत्र खगोलीय घटनाएं हैं, जो एक ही समय में कभी-कभी संयोगवश साथ आ सकती हैं, लेकिन एक-दूसरे का कारण नहीं होतीं. इसलिए यह कहना कि सुपर न्यू मून सूर्य ग्रहण का कारण बनता है, वैज्ञानिक रूप से सही नहीं है.

तैरने के साथ चल भी सकती है यह शार्क

समुद्र की रहस्यमयी दुनिया में आए दिन नए जीवों की खोज होती रहती है, लेकिन कुछ खोजें इतनी अनोखी होती हैं कि वे पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं. पापुआ न्यू गिनी में मिली नई वॉकिंग शार्क ऐसी ही एक खोज है, जिसने वैज्ञानिक समुदाय को हैरान कर दिया है.

आमतौर पर शार्क को तेज तैराक और समुद्र के खतरनाक शिकारी के रूप में जाना जाता है. लेकिन इस नई प्रजाति की खासियत यह है कि यह अपने पेक्टोरल फिन का उपयोग पैरों की तरह करती है. इन पंखों की मदद से यह कम गहराई वाले पानी, चट्टानी सतहों और कोरल रीफ पर चल सकती है.

यह अनोखी क्षमता इसे दूसरे समुद्री जीवों से अलग बनाती है. जब पानी का स्तर कम होता है या शिकार को पकड़ने के लिए विशेष परिस्थितियां बनती हैं, तब यह शार्क तैरने के बजाय चलने का तरीका अपनाती है. इससे उसे भोजन खोजने और कठिन इलाकों में आसानी से घूमने में मदद मिलती है. यह नई खोज इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि इससे समुद्री जीवों के विकासक्रम को समझने में मदद मिल सकती है.

शोधकर्ताओं का मानना है कि करोड़ों वर्षों में जीवों ने अपने वातावरण के अनुसार खुद को ढाला है और वॉकिंग शार्क इसका शानदार उदाहरण है.

अब नहीं चाहिए कूलिंग टावर

एनवीआइडिआ की नई तकनीक करेगी कमाल

एआई क्रांति के दौर में डेटा सेंटरों की मांग तेजी से बढ़ रही है. चैटजीपीटी जैसे जनरेटिव एआई मॉडल, बड़े भाषा मॉडल (एलएलएम) और उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग सिस्टम्स को चलाने के लिए हजारों शक्तिशाली ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (जीपीयू) और सर्वर लगातार काम करते हैं. इसके कारण डेटा सेंटरों में बिजली की खपत और गर्मी दोनों अभूतपूर्व स्तर तक पहुंच रही हैं. इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए एनवीडिया ने अपनी नई रुबिन-जनरेशन कूलिंग तकनीक पेश की है, जो डेटा सेंटर उद्योग में बड़ा बदलाव ला सकती है.

अब तक अधिकांश डेटा सेंटर बड़े-बड़े पंखों और वायु-आधारित शीतलन प्रणाली पर निर्भर रहे हैं. कई जगहों पर सर्वरों को ठंडा रखने के लिए विशाल शीतलन टावर और लाखों लीटर पानी का उपयोग किया जाता है. लेकिन एनवीडिया का नया समाधान इन पारंपरिक तरीकों से अलग है. कंपनी ने एक बंद-चक्र द्रव शीतलन प्रणाली विकसित की है, जिसमें सील्ड कोल्ड प्लेट्स सीधे प्रोसेसर और जीपीयू के संपर्क में रहती हैं.

ये प्लेट्स गर्मी को तुरंत अवशोषित करके शीतलक द्रव के माध्यम से सिस्टम से बाहर निकाल देती हैं. इस तकनीक का सबसे बड़ा फायदा पानी की बचत है. पारंपरिक शीतलन अवसंरचना में बड़ी मात्रा में पानी खर्च होता है, जबकि एनवीडिया का नया सिस्टम लगभग पानी-मुक्त संचालन की दिशा में कदम माना जा रहा है.

इसके अलावा, पंखों की जरूरत कम होने से ऊर्जा खपत भी घट सकती है और डेटा सेंटर अधिक शांत तथा कुशल तरीके से संचालित हो सकेंगे.

आने वाले वर्षों में एआई आधारित कार्यभार कई गुना बढ़ने वाले हैं. ऐसे में केवल अधिक शक्तिशाली चिप्स बनाना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उन्हें प्रभावी तरीके से ठंडा रखना भी उतना ही जरूरी होगा. एनवीडिया की रुबिन-जनरेशन तकनीक इसी जरूरत को ध्यान में रखकर विकसित की गई है. अगर यह तकनीक बड़े पैमाने पर अपनाई जाती है, तो डेटा सेंटर उद्योग में ऊर्जा दक्षता बढ़ेगी, परिचालन लागत कम होगी और पर्यावरणीय प्रभाव भी घटेगा.